धर्म प्रचार
(आध्यात्मिक पक्ष)
भाग – ७

गुरूओं, अवतारों ने –

राक्षसीय–बुद्धि वाले इन्सानों को अच्छा तथा उत्तम–मार्गदर्शन
प्रदान करके, इन्सानियत सिखाने के लिए,
इन्सान को देवता बनाने के लिए,
आत्मिक मंडल की सूझ तथा प्रेरणा प्रदान करने के लिए,
आत्मिक मंडल के प्रकाश अथवा 'शबद', 'नाम'
की लालसा, भूख, प्यास जागृत करने के लिए,
इस आत्मिक भूख या रुचि द्वारा आत्मिक मंडल
की 'खोज' तथा साधना करवाने के लिए
साधना द्वारा, अन्त में 'आत्मिक बख्शिश'
गुरप्रसादि (Grace) के 'पात्र' बनने के लिए,

भिन्न–भिन्न समय पर, आवश्यकता अनुसार, भिन्न–भिन्न **'धर्मों' की रचना की।** परन्तु मनुष्य ने–दिमागी, बाहरमुखी, वैज्ञानिक, मायिकी ज्ञान में तो **अत्यन्त बढ़ोत्तरी** की, जिसके मनमोहक, चकाचौंध कर देने वाली चमक के चमत्कारों ने लोगों के मन इतने **चुंधिया** दिये हैं कि जीव अपने केन्द्र, **'परमात्मा' को भूल कर, अन्धाधुन्ध 'माया की छाया'** के पीछे **सरपट घुड़दौड़ लगा रहा है।** इस प्रकार मनुष्य ने मायिकी जीवन के **अनावश्यक रुझान** इतने बढ़ा **लिये** हैं कि उसको अच्छे तथा उत्तम **आत्मिक ज्ञान का–**

ख्याल ही नहीं आता,
रुचि ही नहीं,

आवश्यकता ही नहीं,

फुरसत ही नहीं।

आश्चर्य की बात तो यह है, कि –

सदियों के लम्बे समय में

धर्मों की बहुलता तथा सम्प्रदायों की प्रफुल्लता,

इतने नवीन तथा सरल धर्म प्रचार के साधनों के बावजूद इन्सान की मानसिक तथा धार्मिक ग्लानि वाली दुर्दशा बढ़ती जा रही है।

यह समस्त दुखदायी मानसिक तथा धार्मिक **गिरावट तथा ग्लानि,** स्पष्ट रूप में हमारे मानसिक तथा धार्मिक जीवन के **हर पक्ष में प्रत्यक्ष प्रकट हो रही है।**

यह **सर्वज्ञ तथा सर्वपक्षीय ग्लानि** (all prevailing universal corruption) **हमारे जीवन के ताने–बाने तथा रग–रग में** इतनी –

धँस गयी है,

बस गयी है,

रस गयी है,

घुल मिल गयी है,

समा गयी है,

कि हमारे जीवन का **'आचार'** तथा **'आधार'** (character and sustenance ही बन गया है, जिस कारण, धर्म एक –

फालतू–ही (superfluous)

अनावश्यक (unessential)

थोथा ही (unispiring)

दिखावे वाला (showy)

मुर्दा साधन (ritual)

ही **बन कर रह गया है।**

इस प्रकार हमने 'धर्म' को अपने जीवन में पवित्र–पावन **श्रद्धा–भाव वाले स्तर से उतार कर, उसके स्थान पर,** त्रिगुणी माया के **भ्रम–भ्रान्ति के 'अहम्' का राज्य** स्थापित कर दिया है। (we have degenerated religion

and divinity in our thouhts & actions and installed corrupt, selfish and cruel regime of our ego, based on illusionery 'Maya', which is playing havoc with humanity in all aspects of life.)

अपनी मायिकी तुच्छ रुचियों का **रंग चढ़ा कर,** हम **धर्म में ग्लानि ले आये हैं** तथा धर्म को अपने **स्वार्थ के लिए प्रयोग करते हैं।** इस तरह हम अपने **'अहम्' को चारा डालकर पाल रहे हैं।** (we have modified and denigrated religion to suit our own selfish ends and to 'Feed' and 'develop' our 'ego').

धर्महीन, बेलगाम, पले हुए 'अहम्' के 'दीर्घ रोग' ने चारों ओर, अन्दर–बाहर सारी दुनिया में मोह–माया, लोभ, मैं–मेरी तथा तृष्णा–अग्नि की **लपटें मचा दी हैं तथा 'आतिश दुनिया'** बना दिया है। इसके परिणाम स्वरूप ईर्ष्या–द्वेष, वाद–विवाद, लूट–मार, वैर–विरोध, लड़ाई–झगड़े तथा खून–खराबे की हाहाकार **मची हुई है** और **धर्म के नाम पर अत्याचार तथा जुल्म हो रहे हैं।**

धार्मिक रुचि वाली नेक **'आत्मा' के लिए,** ऐसे **'दमघोटु' तथा 'सहम' वाले वातावरण में जीना, बसना तथा धर्म के आदेश पर चलना, अति कठिन हो गया है** क्योंकि उसे **जीवन के हर पक्ष में, 'ग्लानि** (corruption) **का ही सामना तथा टकराव करना पड़ता है।**

ग्लानि–परिपूर्ण वातावरण (vicious atmosphere) में थोड़े समय तक तो नेक धर्मी पुरुष टक्कर लेते हैं, परन्तु कुछ समय उपरान्त पाँच विकारों की **शक्तिशाली 'हठीली फौज'** इनको–

'खेदु करहि अरु बहुतु संतावहि', 'नीति डसै पटवारी'

आदि के डर तथा धमकियों से, **अपने जैसा ही बना लेती हैं।**

दुखदायी बात तो यह है कि जिस 'धर्म' तथा 'धर्म–स्थानों' में से हमें **शान्ति तथा ठंड प्राप्त होनी थी, वहाँ भी,** हम स्वयं लगायी हुई **आग की लपटें साथ ले गये, मायिकी तृष्णा के अग्नि कुंड बना दिये** तथा ईर्ष्या–द्वेष, वैर–विरोध का **अखाड़ा बनाकर खिचड़ी पका दी।**

पर हाय!

ठंड कहाँ?
शान्ति कहाँ?
सुख कहाँ?
चैन कहाँ?
धर्म कहाँ?

इस **'आतिश दुनिया'** में कोई विरला **हरिया-बूट** - गुरमुख प्यारा ही **बचता** है, जिसने **'खुनक-नामु खुदाइआ', का सहारा लिया है।** तब ही गुरबाणी में-

मन मेरे गहु हरि नाम का ओला॥
तुझै न लागै ताता झोला॥ (पृ. १७९)

का उपदेश दृढ़ कराया गया है।

इस भयानक तथा दुखदायी मानसिक तथा धार्मिक **अधोगति का कारण धर्म नहीं हो सकता,** क्योंकि धर्म तो हमें उत्तम तथा अच्छी **आत्मिक दिशा की ओर प्रेरित करता है तथा मार्गदर्शन करता है-**

बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बिचारै॥ (पृ. १३५०)

एको धरमु द्रिड़ै सचु कोई॥ (पृ. ११८८)

वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ॥ (पृ. ९१९)

बेद पुरान सिम्रिति के मत सुनि निमख न हीए बसावै॥ (पृ. ६३२)

इससे स्पष्ट है कि हमारी गिरावट तथा गलानि का **मूल कारण** (basic defect) **'चिंतन न करना' है या नाममात्र तथा गलत 'चिंतन' है।** (superfluous or wrong interpretation) । इस प्रकार हमारी **धार्मिक धारणाँए भी गलत हो सकती है** (wrong conception of religion) । जिस कारण हमनें आत्मिक मंडल से अवतरित अनुभवी **बाणी** के **आन्तरिक भाव** तथा वास्तविक पवित्र-पावन **उद्देश्य को,** अपनी चतुराइयों, दिमागी उक्तियों-युक्तियों द्वारा, **अल्प बुद्धि के परायण करके,** अपने-अपने **मन का रंग चढ़ा कर, 'दिमागी' शुगल ही बना दिया है** तथा ऐसे नाम मात्र बाहरमुखी **दिमागी ज्ञान का ही प्रचार करते जा रहे हैं।** (To discuss and propagate our

superfluous religious philosophical conception has become an intellectual excursion and fashion).

यह बाहरमुखी **दिमागी धर्म प्रचार –**

त्रिगुणी मायिकी मंडल की
'अहम्' की सीमा में,
द्वैत भाव में,
मायिकी **भ्रम – भुलाव के अन्धकार में,**
मनोकल्पित धार्मिक धारणाओं,

के आधार पर हो रहा है तथा इसका **प्रभाव भी** हमारी **बुद्धि की सीमा तक ही सीमित है,** जिस कारण हमारे जीवन में **कोई परिवर्तन नहीं आ रहा।** यह **मनोकल्पित धारणाएं भी,** भिन्न – भिन्न समय पर हमारी **दिमागी रुचि तथा मायिकी स्वार्थ अनुसार बदलती रहती है।**

हउ पंडितु हउ चतुरु सिआणा॥
करणैहारु न बुझै बिगाना॥ (पृ. १७८)

हम बड कबि कुलीन हम पंडित हम जोगी संनिआसी॥
गिआनी गुनी सूर हम दाते इह बुधि कबहि न नासी॥ (पृ. ९७४)

हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु॥
हउ विचि पाप पुंन वीचारु॥ (पृ. ४६६)

इस प्रकार **आत्मिक मंडल के 'प्रकाश' में से अवतरित अनुभवी गुरबाणी के –**

आशय
आदेश
जीवन – सेध
मार्गदर्शन
आत्मिक ज्ञान
आत्मिक प्रकाश
आत्मिक प्रेम – प्यार
महा – रस

से हम दूर तथा वंचित होते जा रहे हैं।

सूखा – सड़ा, वीरान **'रेगिस्तान'** (desert) मीलों तक फैला होता है। इसमें कहीं – कहीं जल का **'स्त्रोत'** प्रस्फुटित होता है। इसके चारों और **हरियाली भरा** छोटा सा **'द्वीप'** बन जाता है तथा इसमें **'जीवन लहर'** प्रतीत होती है। इन **'हरियाले द्वीपों'** की अंग्रेजी में (oasis) कहा जाता है। **रेगिस्तानों के पथिकों के लिए, यह हरे द्वीप 'जीवन – आधार'** हैं।

ठीक इसी प्रकार हमारा त्रिगुणी – मायकी **'मानसिक जीवन'** है, जो कि मोह – माया की 'अग्नि' में जल कर, सूखा हुआ सुनसान **रेगिस्तान जैसा बन जाता है –**

गूझी भाहि जलै संसारा भगत न बिआपै माइआ।। (पृ. ६७३)

आतस दुनीआ खूनक नामु खुदाइआ ।। (पृ. १२९१)

इस **स्वयं – रचित** मानसिक **'अग्नि – शोक – सागर'** में **'जीव'** त्राहि – त्राहि करता हुआ दुखदायी जीवन व्यतीत कर रहा है। अधिकांश जनता इसी 'अग्नि – शोक – सागर' में ही **ढीठ होकर** (immune) **मस्त** हुई पड़ी है। परन्तु कई जीव इससे **बचने के लिए धर्म का आश्रय लेते हैं,** जहां से उन्हें थोड़ा – बहुत, नाममात्र **दिलासा** मिलता है।

परन्तु **कुछ गिनी चुनी रुहों** की, मायिकी मंडल के ढोंगी या कर्म – काण्डी 'धर्मों' से **सन्तुष्टि नहीं होती** तथा वे किसी पवित्र, पावन **आत्मिक 'झोंकों' की शीतलता** या आत्म – रस की, **खोज में लगे रहते हैं।** ऐसी विरली प्यासी रूहों की सच्ची – सुच्ची तीव्र आत्मिक **'भूख'** या **कांखी पर रीझ कर,** सतिगुरु उन पर कृपा करते हैं तथा कसी आत्मिक हरे – भरे द्वीप अथवा साध संगत (Divine oasis) का **ज्ञान** या मेल **प्रदान करते हैं।**

महा उदिआन अटवी ते काढे मारगु संत कहिओ ।। (पृ. १२२८)

मारग पाए उदिआन महि गुरि दसे भेत ।। (पृ. ८१०)

किरपा करे जिसु पारब्रहमु होवै साधू संगु।।

जिउ जिउ ओहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रंगु ॥ (पृ. ७१)

यह **हरा–भरा द्वीप** कोई **दृश्यमान स्थान नहीं है।** यह तो बख्शे हुए, गुरुमुख प्यारे, महा–पुरुषों की **अन्तर–आत्मा में, हृदय में–**

प्रेम–भावना
प्रिम–रस
प्रिम–प्याला
आत्मिक–प्रकाश
प्रेम–रंग
आत्मिक–नूर
इलाही–महक
आत्मिक शान्ति
प्रेम 'छुह'
प्रेम 'विभोरता'
रुनझुन
'जीवन रौं'
शबद
नाम
प्रेम स्वैपना

के रूप में प्रस्फुटित होकर प्रकाशित होते हैं।

इस प्रकार **यह गुरुमुख जन, चलते–फिरते, 'हरे–भरे' द्वीप** (mobile oasis) इस कलयुगी ''गूझी भाहि जले संसारा'' में, **'आत्मिक हरियाले टापू' बन कर विचरण करते हैं** तथा जहाँ जाते हैं, **फूलों की तरह,** अपने **आत्मिक जीवन की महक** (aura) **द्वारा–**

सुगन्धि
रस
रंग
शान्ति
प्रीत
प्रेम

चाव
ख़ुशी
मस्ती

की **'छुह'** (infection) **गुप्त रूप में ही लगा देते हैं।**

"लगी लागि संत संगारा।।" (पृ. १०८१)

इस प्रकार उत्तम-जिज्ञासुओं के **मायिकी जीवन को, सिमरन जीवन में बदल देते हैं तथा उनकी 'अन्तर-आत्मा में', 'आत्मिक जीवन' की कांखी, भूख, प्यास लग जाती है।**

इस प्रकार यह बख्शे हुए गुरुमुख प्यारे, आत्मिक मंडल के **अनुभवी-धर्म** के सच्चे-पवित्र **'इलाही प्रचारक'** होते हैं । इनके **'धर्म-प्रचार'** की प्रणाली, किसी **बाहरी दिमागी ज्ञान पर आधारित नहीं होती,** अपितु **फूल की सुगन्धि की तरह, उनकी अन्तर-आत्मा में आत्मिक प्रकाश की तीक्ष्ण किरणें** गुरू की कृपा-दृष्टि द्वारा, **'अभ्यास किये हुए गुरुमुख जीवन' में से स्वतः ही स्फुटित होती हैं।**

इस प्रकार यह गुरुमुख जन, **"आप जपहु अवरह नामु जपावहु", के उपदेश को चुप चाप, अनजाने की सहज-स्वभाव कमा रहे होते हैं।** इनमें अहम्ग्रस्त दिमागी प्रचारकों की भाँति, **अहम्, लेशमात्र भी नहीं होता।**

तब ही गुरबाणी में इन गुरुमुख प्यारों, महापुरुषों की इतनी महानता दर्शायी गयी है तथा इन प्यारों की महिमा में कहा गया है-

जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की
जो आपि जपै अवरह नामु जपावै।। (पृ. ३०६)

तथा साथ ही याचना करनी सिखायी गयी है-

आइ मिलु गुरसिख आइ मिलु तू मेरे गुरू के पिआरे।। (पृ. ७२५)

सेई पिआरे मेल जिन्हा मिलिआ तेरा नाम चित आवे ।। (अरदास)

कोई आवै संतो हरि का जनु संतो
मेरा प्रीतम जनु संतो मोहि मारगु दिखलावै।।
तिसु जन के हउ मलि मलि धोवा पाउो ।। (पृ. १२०१)

होहु क्रिपाल सुआमी मेरे संतां संगि विहावे ।। (पृ. ९६१)

गुरमुखि कोटि उधारदा भाई दे नावै उक कणी ।। (पृ. ६०८)

यह **'इलाही धर्म–प्रचार'**–

इलाही रज़ा में
'अन्तर्गत लिखे हुकुम' अनुसार
अपने–आप
चुपचाप
गुप्त
निरन्तर

हो रहा है।

इस में मनुष्य के **दिमागी ज्ञान,** चतुराई, उक्तियों–युक्तियों, फिलोस्फियों तथा **'अहम्' का काई अंश नहीं होता।**

इन गुरुमुख प्यारों की **आत्मा के पीछे,** सतिगुरु की रजा, कृपा, बख्शिश, **गुर प्रसाद का प्रकाश तथा शक्ति काम करती है।** जब कभी किसी अभिलाषी जिज्ञासु पर सतिगुरु की **कृपा–दृष्टि** होती है, तब सतिगुरु अपने बख्शे हुए गुरुमुख प्यार के **माध्यम से**–

छुह
वचन
नदर–कटाक्ष
इलाही किरणें
प्रेम–तीर

गुप्त रूप से ही जिज्ञासु में धँस, बस, रस जाते हैं तथा वह बख्शा हुआ जीव, आत्म–मंडल की इलाही झलक के प्रभाव–अधीन, अपने आप कह उठता है–

खूबु खूबु खूबु खूबु खूबु तेरो नामु।।
झूठु झूठु झूठु झूठु दुनी गुमानु।। (पृ. ११३७)

अनहद धुनी मेरा मनु मोहिओ अचरज ता के स्वाद।। (पृ. १२२६)

वाहु वाहु किआ खूबु गावता है।।
हरि का नामु मेरै मनि भावता है।। (पृ. ४७८)

सुनहु लोका मै प्रेम रसु पाइआ ।। (पृ. ३७०)

तेरा जनु राम रसाइणि माता ।।
प्रेम रसा निधि जा कउ उपजी छोडि न कतहू जाता ।। (पृ. ५३२)

अचरजु किछु कहणु न जाई ।। बसतु अगोचर भाई ।।१।।रहाउ।।
मोलु नाही कछु करणै जोगा किआ को कहै सुणावै ।।
कथन कहण कउ सोझी नाही जो पेखै तिसु बणि आवै।।२।। (पृ. ८८३)

इस प्रकार जिज्ञासु, **'मायिकी मंडल' में से निकल कर, 'आत्म-मंडल', 'नाम-प्रकाश', 'प्रेम स्वैपना', 'बेगम पुरा' में प्रवेश कर जाता है।**

हमारे ख्यालों में शक्ति है। **अभ्यास किये** गये ख्याल, **अत्यन्त शक्तिशाली** हो जाते है। इस प्रकार नाम-अभ्यास, कमाई वाले, बख्शे हुए गुरुमुख प्यारे के **ख्यालों के पीछे अत्यन्त इलाही शक्ति होती है।** उनकी निहाल करने वाली दृष्टि के विषय में भाई गुरदास जी लिखते हैं-

अंम्रितु नदरि निहालिओनु होइ निहालु न होर सु मंगी।।
दिब देह दिब दिसटि होइ पूरन ब्रहम जोति अंग अंगी।। (वा.भा.गु.६/९)

उनकी आत्मिक शक्ति वाली-

दृष्टि
वचन
छुह
ख्याल
निश्चय
जीवन किरणों

द्वारा, उत्तम जिज्ञासु की **आत्मा को, प्रेरणा, मार्गदर्शन तथा सहायता मिलती रहती है,** सहज स्वभाविक ही उनका जीवन **बदल जाता है** तथा वह **आत्मिक दिशा की ओर 'आकर्षित होता जाता है।**

आत्मिक मंडल के स्तर पर, उत्तम जिज्ञासुओं तथा गुरुमुख – प्यारों के **'मेल'**, **संगत द्वारा, इनके बीच 'आदान – प्रदान', 'व्यवहार', 'वाणिज्य' व्यापार –**

सहज स्वभाविक
अनजाने ही
चुपचाप
अदृश्य
अनसुने
स्वतः
बिना – बोले
सौदेबाजी के बिना
गुप्त रूप में होता रहता है।

किसी विद्वान ने अंग्रेजी में इस विषय को यूं दर्शाया है –

The *personal contact* or company is the easiest and quickest way of *conveying* thoughts and *influencing* others. The affect of such influence of thoughts is dependent on the intensity and conviction of one's feeling on the one side, and the receptibility of the other mind.

Hence persons of developed minds with deep conviction and strong faith, can influence and infect weaker minds, with their thoughts. Where vocal exhortations or intellectual propaganda, fail to have any sustaining mark on the minds of the audience, the very presence of a dynamic personality can silently inspire and transform the lives of individuals, with his penetrating spiritual rays and vibrations which constantly emanate from his dynamic Spiritual Personality.

The same principle applies to the intutitional writings of Enlightened Souls, which are ever fresh, original and soul stirring.

If cultivated powerful mind can affect the ordinary mind so

deeply on the mental and emotional plane, the Enlightened Divine Souls can also inspire, awaken and ignite the aspiring souls and usher them into the subtle intuitional plane of Divine Realm. If the laser rays or radioactive rays can penetrate through thick metals, and the destructive flash of 'lightening' can do so much havoc on the physical plane, the dynamic spiritual subtle rays of Divine Vibrations - emanating from the Dynamic Personality of a 'God-man'-can also pierce the thick clouds of materialistic ideas and conceptions, and touch the Divine fringes of the soul of the aspirant, and usher him into the Divine Realm.

Thus the silent rays of Divinity can transform the life of an aspiring soul into a spiritual God-man, having been born into the Divine Realm.

This is the direct way of 'introduction' of soul into the Divine Realm of Grace and light. The most difficult part of it, is that of finding and recognising a Truly Enlightened Spiritual soul or God-man.

इसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है–

गुरुमुख जनों का **'मेल'** ही ख्यालों के आदान–प्रदान या **प्रचार का सरल तथा प्रभावशाली साधन है।** एक दूसरे के मन पर विचारों का प्रभाव डालने के लिए, एक और **विचारों की दृढ़ता तथा श्रद्धा–भावना की तीव्रता** तथा दूसरी ओर **'ग्रहण' करने की शक्ति, आवश्यक है।**

दृढ़ विश्वास तथा **अथाह श्रद्धा भाव वाले 'मन'** के **प्रभाव द्वारा,** साधारण मन पर **सहज ही असर पड़ता है।** जहाँ **मौखिक दिमागी प्रचार** का **प्रभाव थोड़े समय के लिए, नाममात्र ही होता है,** वहाँ आत्मिक जीवन वाले महापुरुषों के जीवन में से उत्पन्न तीक्ष्ण आत्मिक किरणें, उत्तम जिज्ञासुओं की आत्मा को स्पर्श करके चुपचाप ही, उनका जीवन बदल सकती हैं।

यही नियम महापुरुषों की **'लेखनियों'** पर भी लागू होता है, जो कि उनके

आत्मिक ज्ञान तथा दृढ़ श्रद्धा से प्रकट होती हैं। यह **'लेख'** आत्मिक मंडल के **अनुभव का 'प्रकाश'** होते हैं तथा सदा ही **पूर्णतया निर्मल, तरोताजा इलाही किरणें होने के कारण,** अन्य रूहों को स्पर्श **करने तथा आत्मिक चिंगारी द्वारा जागृत करने की शक्ति रखते हैं।**

यदि शक्तिशाली मन, साधारण मन की मानसिक भावनाओं के स्तर (level) पर इतना प्रभाव डाल सकता है, तो बख्शे हुए, आत्मिक जीवन वाले, महापुरुषों की इलाही प्रकाश की 'किरणें'– उत्तम जिज्ञासुओं की रूहों को 'झंझोड़ कर', 'जागृत' करके, 'आत्मिक छुह' द्वारा, **इलाही 'प्रकाश मंडल'** में पहुँचाने की भी शक्ति रखती है।

यदि 'लेज़र रेज़' (laser rays) या रेडियो– धर्मी किरणों धातु की मोटी चादरों में **छेद कर सकती हैं,** तो बख्शे हुए महापुरुषों में से निकली **तीक्ष्ण आत्मिक– किरणें** भी **माया के मोटे सबल मानसिक 'आवरण' या भ्रम के काले घनघोर बादलों को चीर कर, जीव की आत्मा को जा छूती** है तथा **आत्मिक मंडल की प्रकाशमयी उपस्थिति में पहुंचा सकती हैं।**

इस तरह **आत्मिक जीवन** में से **उत्पन्न किरणें,** उत्तम जिज्ञासु की **आत्मा को, चुपचाप** ही **बदल देती हैं** तथा उनका **'नव जीवन' प्रारम्भ हो जाता है।**

आत्मिक मंडल' में **प्रविष्ट होने के लिए** यह उत्तम तथा सरल युक्ति है। परन्तु सच्चे एवं उत्तम आत्मिक जीवन वाले, बख्शे हुए महापुरुष, विरले हैं तथा उनकी पहचान और मेल या संगत, भाग्यशाली रूहों को ही प्राप्त होती है–

पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी।।
मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी।। (पृ. २०४)

जे वड भाग होवहि वड मेरे जन मिलदिआ ढिल न लाईऐ।। (पृ. ८८१)

वड भागि पाइआ गुरि मिलाइआ साध कै सतसंगीआ ।। (पृ. ७०४)

वास्तव में आत्मिक मंडल में, यह इलाही 'व्यापार', 'आदान– प्रदान' सतिगुरु, आप ही, अपनी मौज में, दोनों ओर, खुद ही करता करवाता है–

आपे साजे आपे रंगे आपे नदरि करेइ।। (पृ. ७२२)

इस इलाही मंडल के व्यापार में ''टोटा मूल ना होवई' तथा 'सदा लाभ' ही होता है, क्योंकि 'सच' की 'इकत हट' (मात्र एक ही दुकान) है। तथा 'सच' के ही 'एक – भाँति' के व्यापारी आते हैं तथा 'हरि नाम का लाहा' ले जाते हैं–

संतन सिउ मेरी लेवा देवी संतन सिउ बिउहारा ॥
संतन सिउ हम लाहा खटिआ हरि भगति भरे भंडारा ॥
संतन मो कउ पूंजी सउपी तउ उतरिआ मन का धोखा ॥ (पृ. ६१४)

वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि॥
तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥ (पृ. २२)

आत्मिक मंडल के इस 'इलाही व्यापार' में –

अनूप वस्तु
प्रेम भावना
प्रेम स्वैपना
प्रीत – आकर्षण
प्रेम – प्याला
हरि रस
भक्ति भंडार
सिफ्त सलाह
शब्द
नाम – धन

आदि, अनेक आश्चर्यजनक इलाही 'वखरु' (पूँजी) 'सार वस्तुओं' का 'वाणिज्य', व्यापार, 'आदान – प्रदान' होता है।

यह **आत्मिक मंडल की 'अनूप तथा आश्चर्यजनक' वस्तुओं का वाणिज्य – व्यापार** केवल **इलाही व्यापारियों, गुरमुख जनों, के बीच ही, हो सकता** है। अमृत छकाना इसी **गुप्त इलाही पूंजी** के **व्यापार, वाणिज्य, 'खमीर' का प्रतीक एवं प्रकटाव है।** यहाँ पर मायिकी मंडल के दिमागी ज्ञान की पहुँच नहीं, क्योंकि मायिकी मंडल के दिमागी ज्ञान, उक्तियों, युक्तियों, **चतुराइयों के 'पंख'**, आत्मिक मंडल की **'इलाही चमक'**, 'किरणों', से जल जाते हैं। इसी कारण गुरबाणी में हुकुम है–

"वणजारिआ सिउ वणजु कर लै लाहा मन हसु।।" (पृ५९५)

जिस संगत में ऐसी –

सार वस्तु

अनूप वस्तु

सच–वस्तु

भक्ति–भंडार

प्रेम–रस

तत्–शबद

सच–नाम

सिफ्त–सलाह

का वाणिज्य, व्यापार हो, उसे **'साध–संगति'** या **'सत संगत'** कहा जा सकता है।

गुरबाणी में ऐसी संगत की महत्ता तथा प्रेरणा की गयी है –

सतसंगति कैसी जाणीऐ ।। जिथै एको नामु वखाणीऐ।। (पृ. ७२)

जे लोड़हि सदा सुखु भाई।। साधू संगति गुरहि बताई।।
ऊहा जपीऐ केवल नाम ।। साधू संगति पारगराम ।। (पृ. ११८२)

मिलि सतसंगति परम पदु पाइआ कढि माखन के गटकारे ।। (पृ. ९८२)

सतसंगति प्रीति साध अति गूड़ी जिउ रंगु मजीठ बहु लागा ।। (पृ. ९८५)

मिलि संगति सरधा ऊपजै गुर सबदी हरि रसु चाखु ।। (पृ. ९९७)

साधसंगि विरला को पाए ।। नानकु ता कै बलि बलि जाए।। (पृ. १००४)

सतसंगति महि नामु निरमोलकु वडै भागि पाइआ जाई।। (पृ. ९०९)

मनु असमझु साधसंगि पतीआना।। डोलन ते चूका ठहराइआ ।। (पृ. ८९०)

सदा सदा संतह संगि राखहु एहु नाम दानु देवाइणा ।। (पृ. १०७८)

साधसंगति कै आसरै प्रभ सिउ रंगु लाए।। (पृ. ९६६)

कहु नानक जउ साधसंगु पाइआ ।।

बूझी त्रिसना महा सीतलाइआ।। (पृ. ९१३)

सतसंगति महि हरि हरि वसिआ मिलि संगति हरि गुन जान।। (पृ. १३३५)

आवहु संत मिलहु मेरे भाई मिलि हरि हरि नामु वरवान ।। (पृ. १३३५)

साधसंगति मिलि हरि रसु पाइआ।।
पारब्रहमु रिद माहि समाइआ ।। (पृ. १३४८)

साधसंगति निहचउ है तरणा।। (पृ. १०७१)

साधसंगति बिनु तरिओ न कोइ।। (पृ. ३७३)

इस सारे लेरव का सारांश (essence) यह है कि **'प्रेम–पुरुष', अकाल–पुरुष** ने, जीव को, हर हाल में, **अपने इलाही प्यार की डोरी या 'नाम' में पिरोया हुआ है** तथा अपनी **'हुकुम' की 'डोरी' को** अपने **'प्रेम–आकर्षण' से बाँध कर रखता है** तथा स्वयं ही कृपा, बख्शिश, **गुर प्रसादि के मीठे 'झटके' मारता रहता है।**

तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिंच तनी ।। (पृ८२७)

इस प्रकार सभी धर्म, धर्मों के प्रचार तथा उनके साधन, इसी इलाही 'प्रेम–डारी' के 'आकर्षण' के ही –

प्रतीक हैं
प्रकाश हैं
प्रकटाव हैं
पूर्णता हैं ।

(क्रमशः)